Kalakankar International Journal of Multidisciplinary Research
Volume 1 | Issue 1 | July 2026
Available online at: https://kijmr.com/

भारतीय राजनीति का पर्यावरण परिवर्तन पर प्रभाव

अविनाश मिश्र
राजनीति विज्ञान विभाग, जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग राज्य विश्वविद्यालय, चित्रकूट, उत्तर प्रदेश
Email ID: avinashmishra0409@gmail.com

Received: 02 July 2026 | **Accepted:** 15 July 2026 | **Published:** 25 July 2026

Abstract (सारांश)

यह शोध पत्र भारतीय राजनीति और पर्यावरण परिवर्तन के मध्य संबंध का अध्ययन करता है। वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन केवल पर्यावरणीय विषय नहीं रह गया बल्कि यह एक सामाजिक एवं राजनीतिक विषय बन चुका है। भारत जैसे विकासशील देशों में पर्यावरणीय नीतियां विकास की प्राथमिकताएं, चुनावी राजनीति एवं दलीय राजनीति पर्यावरण परिवर्तन को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है इस शोध का उद्देश्य यह समझना है कि भारतीय राजनीति निर्णय, नीतिगत ढांचों पर्यावरणीय संतुलन को किस प्रकार प्रभावित करता है। शोध में विश्लेषित किया गया है कि भारतीय संविधान में पर्यावरण से संबंधित अनुच्छेद जैसे 48(A) और 51(A) होने के पश्चात् भारतीय राजनीति में पर्यावरण को प्राथमिकता न देकर विकास को प्राथमिकता दी जाती है। औद्योगिकरण , नगरीकरण, बड़े खनन अक्सर राजनीति लाभ और आर्थिक वृद्धि के नाम पर विकसित किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त चुनावी राजनीति में भी पर्यावरणीय मुद्दों का स्थान सीमित किया गया है। इसके साथ यह अध्ययन राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य योजना (NAPCC) पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 तथा न्यायपालिका की पर्यावरण में सक्रिय भूमिका आदि का भी अध्ययन करेगा।

अत: इस शोध पत्र के निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि यदि राजनीति अल्पकालिक लाभ के स्थान पर दीर्घकालिक पारिस्थितिक संतुलन को प्राथमिकता दे तो पर्यावरण परिवर्तन को कम किया जा सकता है इसके लिए आवश्यक है कि सरकार पारदर्शी नीति बनाए पर्यावरण में जन भागीदारी को सुदृढ़ किया जाए केंद्र राज्य के बीच समन्वय बढ़ाया जाए तथा विकास की अवधारणा के बजाय सतत विकास की अवधारणा को अपनाया जाए।

मुख्य शब्द – *पर्यावरण परिवर्तन, जलवायु परिवर्तन, भारतीय राजनीति, पर्यावरणीय शासन, सतत विकास हरित विकास, जन सहभागिता, पारदर्शी नीतियां, राष्ट्रीय योजना, आदि महत्वपूर्ण शब्दों का प्रयोग हम इस शोध पत्र में करेंगे।*

1. प्रस्तावना

पर्यावरण परिवर्तन से आशय प्राकृति में होने वाले उन व्यापक तथा दीर्घकालिक परिवर्तन से है जो मानव की विकसित होने वाली गतिविधियों के कारण होता है। वर्तमान में पर्यावरण परिवर्तन का अर्थ प्रायः जलवायु परिवर्तन (अत्यधिक गर्मी ठंड एवं वर्षा) जैव विविधता में ह्रास , वनों की कटाई, भूमि संरक्षण जल संकट तथा प्रदूषण जैसे समस्याओं से जोड़ा जाता है। औद्योगिक क्रांति के पश्चात पर्यावणीय संतुलन को गहराई से प्रभावित किया है।"वैश्विक स्तर पर पर्यावरण परिवर्तन को वैज्ञानिक दृष्टि से समझने के लिए Intergovermental Panel on climate change (IPCC) की रिपोर्ट महत्वपूर्ण मानी जाती है। जिसमे स्पष्ट किया गया है कि पृथ्वी का तापमान निरंतर बढ़ रहा है और इसके परिणामस्वरूप समुद्र स्तर में वृद्धि ,चरम मौसमी घटनाओं की आवृत्ति सूखा, बाढ़ तथा चक्रवात जैसी आपदाएं बढ़ रही है"[1]

यदि भारतीय परिपेक्ष्य में देखा जाए तो मात्र मानव गतिविधियों से ही नही बल्कि राजनीति नीतियों से भी पर्यावरण प्रमाणित होती हैं। भारत कृषि प्रधान देश है जहां जनसंख्या का बड़ा भाग आजीविका के लिए प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर है। अनियमित मानसून, तापमान में वृद्धि, जल – संकट अनियमित मानसून तापमान में वृद्धि, जल संकट और भूमि की उर्वरता में कमी का सीधा प्रभाव किसानों, आदिवासियों तथा वंचित वर्गों पर पड़ता है। इसी कारण पर्यावरण परिवर्तन केवल पर्यावरणीय मुद्दे नहीं है क्योंकि यह परिवर्तन मात्र पर्यावरण को प्रभावित नही कर रहा है

This is an open access article under the Creative Commons Attribution-Non-Commercial 4.0 International License.
© The Author(s) 2026. KIJMR Published by Kalakankar Publishing.

बल्कि इस परिवर्तन का पूरा प्रभाव आम नागरिकों को हो रहा है इस कारण यह विषय समाज तथा राजनीति से जुड़ा है।"इसी संदर्भ में भारत की राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य योजना (NAPCC) ने इसे स्पष्ट किया कि जलवायु परिवर्तन का प्रभाव कृषि,जल, ऊर्जा, स्वास्थ्य और आजीविका पर पड़ता है अर्थात यह सामाजिक, आर्थिक और नीतिगत मुद्दा है।[2]

वही दूसरी ओर देखा जाए तो भारतीय राजनीति में आर्थिक विकास को प्रमुख लक्ष्य माना जाता है। उद्योगों की स्थापना राजमार्गों का निर्माण, खनन परियोजनाएं बांध और शहरी विस्तार जैसी योजनाएं रोजगार और आर्थिक वृद्धि के लिए आवश्यक मानी जाती है परंतु इससे होने वाले पर्यावरण नुकसान को ध्यान नही दिया जाता है उदाहरण के लिए नर्मदा जल विवाद को सुलझाने के लिए 1979 में नर्मदा घाटी परियोजना को पारित किया गया है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य सिंचाई, पेयजल आपूर्ति और बिजली उत्पादन था। परंतु इसके साथ कई गंभीर पर्यावरणीय और सामाजिक दुष्परिणाम भी सामने आए। जैसे वनों की कटाई और जैव-विविधता का ह्रास, नदी को प्राकृतिक प्रवाह में परिवर्तन, लाखों लोग विशेष कर आदिवासी और ग्रामीण को विस्थापन पर मजबूर किया गया, पर्यावरणीय असंतुलन और जलवायु प्रभाव को नुकसान आदि इन सभी परिणाम की जानकारी के पश्चात भी इस परियोजना को विकास के नाम पर मंजूरी दी गई। "इसी संदर्भ में Ministry of environment and Forests (1987) की एक रिपोर्ट में बड़े बांधों खासकर sardar sarovar बांध जो नर्मदा घाटी परियोजना का प्रमुख बांध था उससे होने वाली पर्यावरणीय एवं सामाजिक क्षति को समझाया गया है"[3]

ग्रेट निकोबार विकास परियोजना भारत सरकार की एक महत्वाकांक्षी योजना है। जिसे हिंद-प्रशांत महासागर के क्षेत्र में भारत की सामरिक स्थिति को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से प्रस्तावित किया गया। इस परियोजना का उद्देश्य ग्रेट निकोबार में अंतरराष्ट्रीय ट्रांस-शिपमेंट पोर्ट, ग्रीन फील्ड हवाई अड्डा विद्युत उत्पादन संयंत्र आदि बनाने का लक्ष्य था। सरकार का तर्क था कि यह परियोजना भारत को क्षेत्रीय व्यापार केंद्र बनाएगी, रोजगार उत्पन्न करेगी और राष्ट्रीय सुरक्षा को सुदृढ करेगी। "वन भूमि का हटाया जाना अर्थात इस परियोजना के लिए लगभग 130.75 वर्ग किलोमीटर से अधिक वन भूमि उपयोग की जाती है, अनुमानतः 9.64 लाख पेड़ काटे जाएंगे, यही नही इस परियोजना से Marine ecosystem और इस परियोजना से वहां के 92% आदिवासी क्षेत्र के भी प्रभावित होने की संभावना है।"[4]

यह निर्णय दिखाता है कि भारतीय राजनीति में कई बार पर्यावरण जोखिमों के बावजूद सामरिक और आर्थिक प्राथमिकताओं को अधिक महत्व दिया जाता है यह मामला "विकास बनाम पर्यावरण" की पारंपरिक बहस का आधुनिक उदाहरण है जहां राज्य अल्पकालिक राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखकर निर्णय लेता है। यदि हम प्रारंभिक विकास सिद्धांतों को देखे तो आर्थिक वृद्धि को ही प्रगति का मापदंड माना गया है औद्योगिक क्रांति के पश्चात् पश्चिमी देशों में यह धारणा प्रबल हुई कि प्राकृतिक संसाधन मानव उपयोग के लिए है इसी के चलते आधुनिकता के अंतर्गत यह मान लिया गया कि जितना अधिक उत्पादन और उपभोग होगा उतना अधिक विकास होगा। इस दृष्टिकोण में पर्यावरण को अक्सर कच्चा माल(raw material) माना गया जिसका उद्देश्य आर्थिक समृद्धि प्राप्त करना है। परिणाम स्वरुप, वनों की कटाई, खनन, बड़े बांध और शहरी विस्तार जैसी गतिविधियां तेजी से बढ़ रही। 20वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में पर्यावरणीय क्षति के गम्भीर परिणाम सामने आने लगे तो इस कारण पर्यावरण और विकास के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए " सतत विकास" की अवधारणा को 1987 की ब्रेटलैंड रिपोर्ट our comman future में सतत विकास को परिभाषित किया गया – " ऐसा विकास जो वर्तमान पीढी की आवश्यकताओ को पूरा करें परंतु भविष्य की आवश्यकताओं से समझौता न करें। अक्सर विकास परियोजनाएं राजनीतिक हितों और चुनावी वादों से जुड़ी होती है। भारत जैसे विकासशील देशों के बीच भी यह विवाद देखा जाता है। विकसित देशों ने ऐतिहासिक रुप से अधिक प्रदूषण किया, जबकि विकासशील देशों पर उत्सर्जन कम करने का प्रभाव डाला जाता है। यहां "साझा किंतु विभेदित उत्तरदायित्व"(comman but differenstiated responsibility) का सिद्धांत उभरकर सामने आया भारत जैसे विकासशील देशों में यह बहस अधिक जटिल एक ओर गरीबी उन्मूलन, रोजगार सृजन और उद्योगीकरण की आवश्यकता है वही दूसरी ओर पर्यावरण का संरक्षण भी आवश्यक है। "हालांकि भारत में ऐसी कई योजनाएं है जो सतत विकास पर आधारित है जैसे "2010 में भारत सरकार द्वारा Ministry of new and renewable energy" के अंतर्गत प्रारंभ किया गया। इस परियोजना में सौर ऊर्जा के माध्यम से बिजली उत्पादन को बढ़ावा देता है इस परियोजना से ग्रीन हाउस उत्सर्जन में कमी हुई वायु प्रदूषण में कमी हुई जलवालु परिवर्तन के प्रभाव को कम किया गया"[5]

राष्ट्रीय सौर मिशन इस बात का उदाहरण है कि विकास और पर्यावरण को परस्पर विरोधी न मानकर एकीकृत रूप में आगे बढ़ाया जा सकता है।सतत विकास की नीतियां होने के बाद भी भी भारतीय राजनीति में अक्सर विकास को ही प्राथमिकता दी जाती है। भारतीय राजनीति में विकास को प्रगति , रोजगार और औद्योगिक कोरिडोर जैसे ठोस निर्माण कार्यों को बड़ी उपलब्धियां मानी जाती है। मतदाता भी तात्कालिक आर्थिक लाभ और सुविधाओं को प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करते है, इसलिए तात्कालिक सरकार विकास परियोजनाओं को अपने एजेंडे का केंद्र मन

लेती हैं। यही नहीं राजनीति दल अपने चुनावी घोषणापत्र में स्वच्छ उर्जा, प्रदूषण नियंत्रण, जल संरक्षक, हरित रोजगार वन संरक्षण और जलवायु परिवर्तन से निपटने के उपायों को शामिल करते हैं। यह दिखाता है कि पर्यावरण अब वोट राजनीति का हिस्सा बन चुका है। हालांकि की घोषणापत्र और वास्तविक क्रियान्वयन के बीच अक्सर अंतर दिखाई देता है। वहीं भारत जैसे संघीय ढांचे में केंद्र और राज्य के राजनीति दलों के बीच अलग अलग राजनीतिक दलों द्वारा संचालित होने की स्थिति में पर्यावरणीय नीतियां में मतभेद उत्पन्न होते हैं। जहां राज्य स्थानीय विकास को प्राथमिकता देता है वही केंद्र राष्ट्रीय विकास को जिससे सामंजस्य की स्थिति का अभाव होता है और इस कारण पर्यावरण का ह्रास होता है। भारतीय राजनीति के माध्यम से पर्यावरण के विषय में कई संभावनाएं देखी जा सकती हैं जो निम्नलिखित हैं-

सकारात्मक प्रभाव

- राजनीति इच्छाशक्ति के आधार पर सौर, पवन और हरित हाइड्रोजन जैसी परियोजनाओं को और अधिक बढ़ावा मिलेगा।
- यदि जनदबाव और नायिक सक्रियता बढ़ती है तो राजनीति दल पर्यावरणीय प्रभाव आकलन और प्रदूषण नियंत्रण कानून को और अधिक सतत बना सकते हैं।
- हरित उद्योगों इलेक्ट्रॉनिक वाहन, जैविक कृषि और कचरा प्रबंध को बढ़ावा देकर राजनीति जलवालु अनुकूलन विकास मॉडल को स्थापित कर सकती है।

नकारात्मक प्रभाव

- यदि राजनीति प्राथमिकता केवल त्वरित आर्थिक विकास और चुनावी लाभ तक सीमित रही तो पर्यावरणीय सरोकार पीछे छूट सकते हैं जिसका मानव जीवन नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

"भारतीय राजनीति के पास यह क्षमता है कि वह जलवायु परिवर्तन की चुनौती को अवसर में बदल दे यह एक निष्कर्षात्मक कथन है, जिसे जलवायु नीति, सतत विकास और दीर्घकालिक नीति-निर्माण संबंधी आधिकारिक दस्तावेज़ों से समर्थित किया जा सकता है"[6]

निष्पक्ष

"भारतीय राजनीति का पर्यावरण परिवर्तन पर प्रभाव" विषय का समग्र विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि पर्यावरण और राजनीति का संबंध अत्यंत गहरा और परस्पर प्रभावकारी है। भारत में जलवायु परिवर्तन केवल एक पर्यावरणीय संकट नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, आर्थिक विकास, राष्ट्रीय सुरक्षा और वैश्विक कूटनीति से जुड़ा बहुआयामी प्रश्न बन चुका है। भारतीय राजनीति नीति-निर्माण, कानून निर्माण, विकास परियोजनाओं, ऊर्जा नीतियों और अंतरराष्ट्रीय समझौतों के माध्यम से पर्यावरण परिवर्तन की दिशा को प्रभावित करती है। एक ओर नवीकरणीय ऊर्जा, अंतरराष्ट्रीय जलवायु प्रतिबद्धताएँ, और सतत विकास की पहलें यह दर्शाती हैं कि राजनीतिक स्तर पर पर्यावरणीय चेतना विकसित हो रही है; वहीं दूसरी ओर त्वरित आर्थिक विकास, औद्योगिकीकरण और अवसंरचना विस्तार की प्राथमिकता कई बार पर्यावरणीय संतुलन को चुनौती देती है। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय राजनीति में विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन स्थापित करने की निरंतर आवश्यकता है। यदि नीति-निर्माण में दीर्घकालिक दृष्टिकोण, पारदर्शिता, वैज्ञानिक आधार और जनभागीदारी को महत्व दिया जाए, तो भारत जलवायु परिवर्तन की चुनौती को अवसर में बदल सकता है।

संदर्भ सूची –

[1]. Intergovernmental Panel on Climate Change (2023). Climate Change 2023: Synthesis Report. 20 March 2023 Geneva: IPCC.

[2]. Ministry of Environment, Forest and Climate Change. (2014). National Action Plan on Climate Change (NAPCC). New Delhi: Government of India.

[3]. Ministry of Environment and Forests. (1987). Environmental Appraisal Report: Sardar Sarovar Project. Government of India.

[4]. Ministry of Environment, Forest and Climate Change, Government of India. Environmental impact of the Great Nicobar Project (Press Information Bureau release, Jul 2024).

[5]. Ministry of New and Renewable Energy. (2010). Jawaharlal Nehru National Solar Mission (Mission Document). Government of India, New Delhi.

[6]. Ministry of Environment, Forest and Climate Change. (2023). India's Long-Term Low Emission Development Strategy (LT-LEDS). Government of India.

Cite this Article:

अविनाश मिश्र (2026). भारतीय राजनीति का पर्यावरण परिवर्तन पर प्रभाव. Kalakankar International Journal of Multidisciplinary Research, 1(1), 31–34.

Journal URL: *https://kijmr.com/*

Disclaimer and Publisher's Note: *The views, interpretations, and conclusions expressed in this article are entirely those of the author(s). The publisher and editors do not accept responsibility for any inaccuracies, copyright infringements, legal claims, or losses resulting from the publication or use of this content.*